संगीत में शोध के क्षेत्र

वंशिका रस्तोगी
पीएच.डी. शोधार्थी,
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली

मनुष्य सदा से ही जिज्ञासु प्राणी रहा है! अपनी इसी प्रवृत्ति के कारण वह नित–नवीन खोजों की ओर अग्रसरित होता रहता है ! मनुष्य ने अपनी बुद्धि और खोज के आधार पर जीवन के बहुत से रहस्यों को खोजने का प्रयास किया है, मनुष्य की इस जिज्ञासु प्रवृत्ति एवं खोज को आधुनिक शब्दावली में 'शोध' संज्ञा दी गई है!

"शोध शब्द शुद्ध धातु में 'धञ' प्रत्यय द्वारा निष्पन्न होता है, जिसका अर्थ– संस्कार या शुद्धि अथवा शोधन प्रक्रिया है!"(१)

शब्दकोषों के अनुसार, "इसके चार अर्थ शुद्धिकरण, स्वच्छीकरण, सुधार एवं उचित विन्यास है!"(२)

संगीत में शोध के क्षेत्र–

भारतीय संगीत नदी के बहते हुए जल प्रवाह की तरह है जो नित्य नए–नए किनारे छूता है और अपनी पुरानी दिशाओं के साथ नवीन दिशाएं भी बनाता है!

यद्यपि संगीत एक ललित कला है, तथापि इसके दोनों पक्षों (क्रियात्मक एवं शास्त्र) में शोध की प्रबल संभावनाएं हैं! शोधकर्ता को सर्वप्रथम अपनी रूचि के अनुसार संगीत के दोनों पक्षों में से किसी एक को चुनना चाहिए है, तत्पश्चात उस पक्ष विशेष से सम्बंधित कोई विषय चयन करना चाहिए !

संगीत में शोध कार्य के लिए व्यापक क्षेत्र विद्यमान है–

संगीत के क्षेत्र में शोध को मुख्यतः तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है–

1–. संगीत शास्त्र पर आधारित शोध

2–संगीत के क्रियात्मक पक्ष पर आधारित शोध

3–अंतर–अनुशास्नीय शोध

1–संगीत के शास्त्र पक्ष पर आधारित शोध–

विगत तीन शताब्दियों से संगीत का शास्त्रीय–पक्ष प्रायः उपेक्षित रहा है ! तत्कालीन मुसलमान शासकों ने संगीत के क्रियात्मक पक्ष को प्रोत्साहित किया उस समय के बड़े संगीतज्ञ संगीत के प्रायोगिक या क्रियात्मक पक्ष पर ही अधिक बल देते थे अतः इस कारण संगीत के शास्त्रीय पक्ष को प्रोत्साहन नहीं मिला! प्रायः प्राचीन सभी ग्रंथ संस्कृत में लिखे गए, जिन्हें ना तो मुसलमान कलाकार जानते थे और ना ही उन्होंने उनका अध्ययन करने का प्रयास किया! इन ग्रंथों में हमारे संगीत का आधार है ,इनमें प्राचीन संगीत के विषय में ज्ञान का अथाह भंडार है इनके अध्ययन से संगीत के प्राचीन स्वरूप को समझा जा सकता है!

संगीत के शास्त्र पक्ष पर आधारित निम्न विषयों पर शोध कार्य किया जा सकता है –

1–तकनीकी शब्द–

संगीत के आधारभूत तत्व जैसे नाद,श्रुति, श्रुति का उद्गम, स्वर का उद्गम एवं विकास, स्वर एवं श्रुति का अंतः संबंध ,प्राचीन आलापना या आलाप ,जाति के 10 लक्षण इत्यादि पर अलग–अलग प्रकार से शोध की जा सकती है!

2– सांगीतिक सिद्धांत–

संगीत के विभिन्न सिद्धांत जैसे राग ध्यान पद्धति ,थाट– राग वर्गीकरण ,रागांग पद्धति इत्यादि में शोध का बहुत विस्तृत क्षेत्र है !

3–.ग्रंथों पर शोध–

संगीत के आधार ग्रंथ जैसे नाट्यशास्त्र, बृहदेशी, संगीत रत्नाकर इत्यादि ग्रंथों में ज्ञान का असीमित भंडार है ! इन प्राचीन ग्रंथों को समझकर उनका विश्लेषण करके पुनराख्यान करने के क्षेत्र की संभावनाएं अधिक प्रबल है!

4–विभिन्न गायन शैलियों पर शोध–

विभिन्न प्रकार की गायन शैलियां जैसे जाति गायन, ध्रुपद, धमार, प्रबंध, ख्याल ,ठुमरी ,टप्पा इत्यादि सभी की उत्पत्ति एवं विकास क्रम पर कार्य किया जा सकता है!

5–.विभिन्न संगीतज्ञों के जीवनकाल एवं घरानों से संबंधित शोध–

प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक संगीत के क्षेत्र में अनेक उच्च कोटि के गायक–वादक हुए हैं, जिनके जीवनकाल, सांगीतिक योगदान इत्यादि पर शोधकार्य किया जा सकता है, साथ ही गायन–वादन एवं नृत्य के अनेक घराने हैं किसी भी एक घराने या उससे संबंधित कलाकार पर शोध कार्य किया जा सकता है!

6–वाद्य एवं उनकी बनावट पर शोध–

इस प्रकार के शोध कार्य में वाद्यों का चतुर्विध वर्गीकरण , प्राचीन वाद्यों एवं उनकी उत्पत्ति ,विकास क्रम इत्यादि पर कार्य करने के काफी क्षेत्र हैं, साथ ही वाद्यों की बनावट पर भी कार्य किया जा सकता है!

7–वाद्य–वृंद में प्रयुक्त वाद्य–

प्राचीन वाद्यवृंद एवं वाद्य वृंद में प्रयुक्त वाद्य तथा किसी विशिष्ट गायन या वादन की संगति के लिए किस प्रकार का वाद्य उपयुक्त था ,इस प्रकार के विषयों पर शोधकार्य किया जा सकता है!

"शास्त्रीय–पक्ष पर आधारित किसी भी शोध कार्य को प्राचीन काल से वर्तमान तक किया जा सकता है!

2–संगीत के क्रियात्मक या प्रायोगिक पक्ष पर आधारित शोध–

संगीत एक प्रायोगिक कला है इसका क्रियात्मक पक्ष बहुत महत्वपूर्ण है अतः संगीत के क्रियात्मक पक्ष में शोधकार्य की निरंतर संभावनाएं बनी रहती हैं जिन्हें निम्न बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है !

1–रागों व धुनों पर शोध–

नवीन धुने एवं नवीन राग निर्माण और पुराने रागों का विश्लेषणात्मक अध्ययन इत्यादि विषय शोध के लिए चुने जा सकते हैं!

2–घराने एवं उनसे संबंधित गायन–वादन शैलियां–

निम्न प्रकार के शोधकार्य के अंतर्गत किसी विशिष्ट घराने पर कार्य, किन्ही दो घरानों का तुलनात्मक अध्ययन ,घरानों की गायन–वादन शैलियां, किसी राग विशिष्ट में स्वरों का लगाव इत्यादि पर कार्य की पूर्ण संभावना है !

3–बंदिशों पर शोध–

इस विषय पर विभिन्न प्रकार से शोध किया जा सकता है! किसी एक वाग्गेयकार द्वारा रचित बंदिशें , कुछ रागों को लेकर उसमें उच्च कोटि की बंदिशें, सम छिपी हुई बंदिशें, नवनिर्मित बंदिशें इत्यादि बिंदुओं पर शोध कार्य किया जा सकता है !

4–हिंदुस्तानी एवं कर्नाटकी रागों पर शोध–

हिंदुस्तानी संगीत में कर्नाटक संगीत से लिए गए, राग या कर्नाटक संगीत में हिंदुस्तानी संगीत से लिए गए, रागों पर विभिन्न दृष्टि से शोध की संभावनाएं हैं!

5–राग–समय सिद्धांत के व्यवहारिक पक्ष पर शोध–

रागों के समय सिद्धांत के व्यवहारिक पक्ष को अपनाकर वर्तमान के संदर्भ में इसकी उपयोगिता आंकी जा सकती है!

6–कंठ साधना से संबंधित शोध–

कंठ साधना के अंतर्गत कंठ की बनावट, आवाज को सुधारना, अभ्यास की नई–नई तकनीक इत्यादि पर शोध किया जा सकता है!

7–राग प्रस्तुतीकरण की क्रिया से संबंधित शोध–

राग प्रस्तुतीकरण से संबंधित शोध में किस राग को किस समय प्रस्तुत किया जाए, एक ही राग को विभिन्न घरानों में किस प्रकार प्रस्तुत किया जा रहा है, कलाकार व श्रोताओं को राग प्रस्तुतीकरण के समय किन किन बातों का ध्यान रखना चाहिए इत्यादि विषयों पर शोध का विस्तृत क्षेत्र है!

8–रागांग पर शोध–

संगीत के क्रियात्मक पक्ष में किसी भी रागांग जैसे मल्हार, तोड़ी, भैरव इत्यादि अंग के प्रचलित और अप्रचलित रागों पर शोध किया जा सकता है! वर्तमान सन्दर्भ में राग–वर्गीकरण के लिए ठाट–राग पद्धति पूर्ण रूप से प्रासांगिक नहीं रही! ऐसे राग जिनमे स्वर के शुद्ध और विकृत दोनों रूपों का प्रयोग हुआ हो वह प्रचलित 10 थाटों में वर्गीकृत नहीं हो पाते अतः वर्तमान में ठाट–राग वर्गीकरण की तुलना में रागांग वर्गीकरण को महत्व दिया जा रहा है परन्तु रागांग पद्धति पर अभी और शोध की आवश्यकता है ! इस प्रकार रागांग पर शोध के लिए काफी बड़ा क्षेत्र है !

3–अंतर–अनुशासनीय शोध–

सर्वप्रथम अंतर–अनुशासनीय अर्थ को समझना आवश्यक है, यहां अनुशासन का अर्थ है विषय तथा अंतर का अर्थ है आपस में ! इस प्रकार अंतर–अनुशासनीय का अर्थ है विषयों का आपसी संबंध !

अतः संगीत के क्षेत्र में अंतर–अनुशासनीय शोध से तात्पर्य ऐसी शोध से है जिसमें संगीत का संबंध अन्य विषयों से जोड़कर शोध कार्य किया जाए! ऐसे बहुत से विषय हैं जिनका संगीत से घनिष्ठ संबंध है तथा जिन पर शोधकार्य किया जा सकता है उनमें से कुछ विषय निम्न हैं –

1–संगीत एवं भौतिक विज्ञान–

संगीत का भौतिक विज्ञान से बहुत घनिष्ठ संबंध है ! ध्वनि, ध्वनि की उत्पत्ति, इसका उत्पादन ,संचरण, ग्रहण इत्यादि सभी भौतिक विज्ञान से ही संबंधित विषय हैं , दूसरी ओर तानपुरे के तारों की आंदोलन संख्या ,आयाम , स्वयंभू नाद इत्यादि भी भौतिक विज्ञान के ही विषय हैं, जिन पर शोध का विस्तृत क्षेत्र है !

2–संगीत एवं गणित से संबंधित शोध–

संगीत व गणित का संबंध प्राचीन काल से जुड़ा है! सर्वप्रथम अहोबल द्वारा वीणा के तार पर स्वरों की स्थापना गणितीय आधार पर ही की गई थी! व्यंकटमखी के 72 मेलों की रचना व ताल की दृष्टि से आड़ ,कुआड़ ,बिआड़ इत्यादि में गणितीय आधार ही है! वाद्यों की बनावट, उनकी वादन शैली इत्यादि में भी कहीं ना कहीं गणितीय आधार है अतः संगीत और गणित को लेकर उच्च श्रेणी के शोधकार्य की पूर्ण संभावना है!

3–संगीत में सौंदर्य शास्त्र–

संगीत व सौंदर्य शास्त्र का अटूट संबंध है संगीत एक

रसानुभुतिक व आनंददायक कला है अतः संगीत की किसी भी गायन शैली को उन्नत बनाने के लिए सौंदर्यशास्त्र के विभिन्न सिद्धांतों का ज्ञान आवश्यक है! संगीत व सौंदर्यशास्त्र पर शोध में निम्न विषयों को केंद्र बनाया जा सकता है, जैसे कुछ बंदिशों को लेकर यह देखना कि इनके शब्द राग की प्रकृति के अनुकूल है अथवा नहीं या जिस ताल में बंदिश निबद्ध है वह ताल ,राग और बंदिश की प्रकृति के अनुकूल है अथवा नहीं !

4–संगीत व दर्शनशास्त्र–

इस प्रकार की शोध में संगीत के दार्शनिक स्वरूप का अध्ययन किया जा सकता है ! संगीत व दर्शनशास्त्र पर भी एक उच्च कोटि के शोधकार्य की पूर्ण सम्भावना है !

5–संगीत व साहित्य–

साहित्य का विशेषकर संबंध संगीत गायन से है क्योंकि गायन की अभिव्यक्ति स्वर, पद, ताल के माध्यम से होती है यहाँ पद का संबंध साहित्य से है ! गायन की बंदिशों के माध्यम से इस प्रकार के शोध की संभावना अधिक है !

6–संगीत व राजनीति विज्ञान–

इन विषयों पर आधारित शोध के माध्यम से किसी विशिष्ट काल में या संपूर्ण ऐतिहासिक काल में संगीत पर किस प्रकार राजनैतिक प्रभाव पड़ा अर्थात किस शासक के काल में संगीत को बढ़ावा मिला, किस शासक ने संगीत को हतोत्साहित किया, किस विशिष्ट काल में संगीत में महत्वपूर्ण खोजे हुई इत्यादि पर शोध किया जा सकता है !

7–संगीत व धर्म पर आधारित शोध–

प्रत्येक देश का संगीत धर्म से जुड़ा है भारतीय धर्म में संगीत को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है इस प्रकार के शोध द्वारा धार्मिक अनुष्ठानों में संगीत का स्थान अथवा संगीत के विकास में धार्मिक विचारधारा का योगदान इत्यादि विषयों पर कार्य किया जा सकता है!

8– संगीत व संस्कृति–

जन्म से मृत्यु तक जितने भी संस्कार होते हैं चाहे वह विवाह हो या जन्मदिवस या फिर मृत्यु सभी में संगीत की अपनी एक अहम् भूमिका रहती है ! किस प्रकार के उत्सव पर कैसा संगीत हो ,कौन से वाद्य बजाए जाए इत्यादि को जानने हेतु या भिन्न–भिन्न प्रांतों के लोक संगीत को जानने हेतु संगीत व संस्कृति पर आधारित शोध किये जा सकती हैं !

9–संगीत व मनोविज्ञान–

मनोविज्ञान मन का विज्ञान है जिस प्रकार मनोविज्ञान का संबंध मानव मन से है, उसी प्रकार संगीत भी मन से ही जुड़ा है! संगीत व मनोविज्ञान पर आधारित शोध के अंतर्गत स्वरों, बंदिशों इत्यादि का मानव चेतना पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है ! संगीत का मानव मन पर बहुत प्रभाव पड़ता है, अतः स्वरों ,गीतों एवं रागों का मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन किया जा सकता है !

10–संगीत व समाजशास्त्र–

जिस प्रकार देश का दर्पण समाज है ,उसी प्रकार समाज का दर्पण संगीत है! वह संगीत जो जनसाधारण के अधिक निकट है अर्थात लोक संगीत, इसके माध्यम से देश में रहने वाले विभिन्न प्रांतों के लोगों की जीवन शैली, वहां का सामाजिक वातावरण ,रहन–सहन , तीज त्यौहार इत्यादि की झलक उस प्रांत के लोकसंगीत द्वारा प्राप्त हो जाती है संगीत मनुष्य के सामाजिक जीवन में प्रत्येक क्षेत्र के साथ जुड़ा है अतः इस विषय पर भी शोध की संभावना अधिक है!

11– संगीत व चिकित्सा विज्ञान–

वर्तमान में संगीत व चिकित्सा विज्ञान को लेकर बहुत से शोध कार्य किये जा रहे हैं! जिसके अंतर्गत रागों के माध्यम से मानव चिकित्सा की जाती है !

12–संगीत व इतिहास–

संगीत के किसी भी पहलू के उद्‌गम एवं विकास क्रम को देखने के लिए हमें इतिहास का सहारा लेना ही पड़ता है इसके अंतर्गत स्वर ,राग, गायन–शैलियाँ इत्यादि विषयों पर शोध किया जा सकता है !

13–संगीत एवं वनस्पति विज्ञान–

विभिन्न रागों का वनस्पति, पेड़–पौधों इत्यादि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन इसी विषय के माध्यम से किया जा सकता है अर्थात किसी विशिष्ट राग या धुन के बजाने से पेड़–पौधे किस प्रकार प्रभावित हो रहे हैं, उसकी वृद्धि कैसे हो रही है, क्या वह अधिक फल–फूल दे रहे हैं, इत्यादि बिंदुओं को लेकर शोध कार्य किया जा सकता है!

<u>निष्कर्ष–</u>

इस प्रकार कहा जा सकता है कि संगीत में शोध की अपार संभावनाएं हैं ! अभी ऐसे ना जाने कितने विषय हैं जो शोध से अछूते हैं अंतर अनुशासनीय शोध में संगीत के संबंध को दो या इससे अधिक विषयों के साथ भी दिखाया जा सकता है! शोध में महत्वपूर्ण बिंदु यह है कि जो भी विषय शोधार्थी को दिया जाए वह उसकी रुचि के अनुकूल हो,जिससे वह उस शोधकार्य को रूचि के साथ पूर्ण कर सके !

<u>संदर्भ–</u>

बैजनाथ सिंहल, शोर स्वरूप एवं मानक व्यवहारिक कार्य विधि, पृष्ठ–10

मोनियम विलियम्स ए संस्कृत– इंग्लिश डिक्शनरी पृष्ठ–1069